B.A. Part - I

द्रुत झरो पात (पंत)

डॉ. अनिरुद्ध प्रसाद
हिन्दी विभाग
महाराजा कॉलेज, आरा

प्रश्न : कवि पंत की कविता 'द्रुत झरो पत्र' का भावार्थ प्रस्तुत कीजिए।

उत्तर : 'द्रुत झरो पत्र' कवि सुमित्रानंदन पंत की प्रगतिवादी कविताओं में से एक है। कवि प्रगतिवादी समाज के ओर में कदम बढ़ाना चाहता है वह जड़ समाज का समर्थक नहीं है। जो जीर्ण-शीर्ण है। ऐसे अतीत का नष्ट हो जाना ही समाज कल्याण के लिए अच्छा है। विश्व-वृक्ष के पुराने मुरझाए हुए, प्राणहीन पत्तों के झड़ जाने के बाद ही जग-उपवन का कल्याण होगा। जब तक वे पुराने, प्राणहीन पत्ते झड़ नहीं जायेंगे तब तक नए जीवन के पत्ते नहीं खिलेंगे। कवि ऐसे पत्तों को देखना नहीं चाहता, जो सर्दी-गर्मी को न सह सकने के कारण पीले पड़ गए हैं। जो कँपैनी प्रहार से डरते हैं। कवि संकेत स्वर में कहता है — "तुम पतझार से निष्प्राण पड़े हो, तुममें चेतना नहीं रह गयी है, तुम बिखड़े हुए पुराने पड़ गए हो। ऐसे पत्तों की कोई उपयोगिता नहीं रह गयी है। तुम्हारे झड़ जाने के बाद ही नए पत्ते निकलेंगे।"

कवि जड़ समाज की जगह चेतन समाज को देखना चाहता है वह ऐसे प्राणी को चाहता है जो हिम-ताप को, संकटों को झेल सके। वे नवीन का स्वागत [illegible] करना चाहते हैं। वे कहते हैं — "जीवन के प्रति उत्साह न हो, जिन्हें जीवन में अनुरक्ति हो, प्रगति में विश्वास हो वहीं मेरे साथ चलें।" हमारा समाज रूढ़ि-परंपराओं और बेड़ियों में जकड़ा हुआ है, उसमें गति नहीं है, जीवन का कोई चिह्न नहीं है, वह निष्प्राण हो गया है। इस मरे [illegible] हुए पत्तों के समान है। विगत युग का निष्प्राण हो गया है। इस सड़े और

P.T.O

मरे हुए भूत के शव को हमें घर से बाहर निकाल फेंकना है। हे अतीत रूपी पंछी! तुम्हारे पंख बिखर चुके हैं। जगत के घोंसले में तुम्हारा शब्द मुखरित नहीं होता, तुम्हारे प्राणों की गति चुनाई नहीं पड़ती। तुम्हारे पंखों का सदा के लिए अनंत काल में विलीन हो जाना ही ठीक है।

कवि कामना करता है कि फिर जग के शरीर में नये खून की लाली आये, नवीन माँस की सजीवता आए। जग के उपवन में नए अरुण पल्लव खिलें, प्राणों का स्वर मुखरित हो और नवजीवन की हरियाली छाये। विश्व-वृक्ष फिर से हरा-भरा हो जाए, उसमें यौवन का पिक गुंजन करे। वह प्रेम की काकली सुनाए, प्रेम के स्वर की मदिरा से नव युग का प्याला भर उठे। यह तभी संभव होगा जब विश्व को आम्रवृक्ष के पीले पत्ते, मुरझाए पत्ते झड़ जाएँ, नए पत्ते निकल आएँ, और पौधों पर बौर लगे। उन बौरों पर तरुण पंछी कूजन करें। कोयल की कूक में प्रेम का एक नया नशा होता है। नवयुग की प्याली इस प्रेम की मदिरा से भर जाए। कवि जग में ऐसे ही भोर की कल्पना करता है, जहाँ सभी लोग सुखी हों और आनंद से जीवन बितायें।

U.G. Hindi (Hons)
B.A. Part 1
'Drut Jharo Paat'.